सामुदायिक विकास कार्यक्रमों की सफलता के लिये सुझाव
(Suggestion of Success of Community Development Projects)

सामुदायिक विकास कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में अनेक कठिनाइयों के बावजूद इन कार्यक्रमों ने देश के करोड़ों ग्रामवासियों में एक नवीन आशा का संचार किया है। भविष्य में इन कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिये निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं–

(1) अनुसन्धान कार्यों में वृद्धि की जाए–पशुपालन, कृषि, ग्रामोद्योग, गृह उद्योग आदि अनेक विषयों में अनुसन्धान संस्थायें स्थापित की जायें तथा कार्य क्षेत्र एवं सम्बद्ध अनुसंधान इकाई में निरन्तर सम्पर्क बना रहना चाहिये।

(2) ग्रामीण जनता में उत्साह तथा शिक्षा की वृद्धि की जाये–देश में शिक्षा तथा उत्तरदायित्व का अभाव है। शिक्षा द्वारा जनता में उत्तरदायित्व एवं सहयोग की भावना को प्रेरित किया जा सकता है। सामुदायिक विकास योजनाओं की सफलता जनता के सहयोग पर निर्भर करती है। अतः ग्रामों में शिक्षा का प्रसार तथा सहयोग की भावना का विकास करना आवश्यक है।

(3) कृषि कार्य तथा उसकी उन्नति पर अधिक बल देना–हमारे देश की प्रगति गहरी खेती के प्रचार तथा उत्पादन की मात्रा में वृद्धि पर निर्भर करती है। अतः प्रत्येक योजना में कृषि के विकास को महत्व देना आवश्यक है।

Scanned with CamScanner

(4) ग्रामोद्योग की स्थापना में पर्याप्त सहयोग देना—ग्रामोद्योगों के विकास के लिये यह आवश्यक है कि 15 विकास खण्डों के लिये एक औद्योगिक केन्द्र तथा एक बस्ती बनाई जाये। ग्रामोद्योग की स्थापना से ग्रामीण बेरोजगारी तथा निर्धनता के उन्मूलन में पर्याप्त सहायता मिलेगी।

(5) प्रशासनिक कुशलता में वृद्धि लाई जाये—सामुदायिक विकास केन्द्रों में कार्य करने वाले अधिकारियों तथा पंचायतों के सदस्यों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाये जिससे वे इन योजना में अधिक सक्रिय एवं व्यावहारिक योगदान दे सकें।

(6) भूमि सुधार में योगदान देना—**सामुदायिक विकास कार्यक्रमों** को भूमि सुधार कार्यक्रमों से सम्बद्ध कर दिया जाये। इससे इस योजना में कृषकों का विश्वास बढ़ जायेगा।

(7) सहकारी आन्दोलन को प्रोत्साहन देना—सामुदायिक विकास योजना में सहकारी आन्दोलन को प्रोत्साहन देना चाहिये। सहकारी कृषि, सहकारी उद्योग, सहकारी विपणन समितियों की संख्या में वृद्धि की जाये। इससे जनता में परस्पर सहयोग की भावना का विकास होगा, आर्थिक कठिनाइयों का निराकरण होगा तथा प्राप्त होने वाले लाभ का उचित वितरण होगा।

(8) लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण होना—**बलवन्त राय मेहता** समिति का एक सुझाव यह था कि देश में लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण होना चाहिये। इन कार्यों को चलाने का उत्तरदायित्व जनता द्वारा निर्वाचित सदस्यों को दे दिया जाना चाहिये। अतः ग्राम पंचायतों, विकास खण्ड एवं जिला परिषदों जैसी संस्थाओं को यह महत्वपूर्ण कार्य सौप देना चाहिये।

(9) ग्राम सेवक के कार्य को सीमित करना—एक ग्राम सेवक के निर्देशन में उतना ही कार्य क्षेत्र होना चाहिये जितना कि वह सरलतापूर्वक चला सके।

(10) विकास कार्यों पर बल देना—सामुदायिक विकास योजना के अन्तर्गत कल्याण कार्यों के स्थान पर विकास कार्यों पर अधिक बल देना चाहिये। दूसरे **ग्रामीण समाज के निर्बल वर्गों** (सीमान्त कृषक, लघु कृषक) कारीगर आदि को इन कार्यक्रमों से अधिक लाभ पहुँचाने का प्रयास करना चाहिये।

(11) परिवार नियोजन को महत्व देना—देश की सबसे विकट समस्या बढ़ती हुई जनसंख्या है। अतः सामुदायिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत परिवार नियोजन कार्यक्रमों को एक आवश्यक अंग बनाया जाये।

□□□

Scanned with CamScanner